Reg.No.BR/2025/0487469

Teachers of Bihar

पद्यपंकज

अक्टूबर 2026 | अंक 25



बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

मासिक कविता संग्रह

ई-पत्रिका तक पहुँचने हेतु QR कोड को स्कैन करें

टीचर्स ऑफ बिहार गीत

एम आर चिश्ती

चाँद तारों को साथ लाएँगे, हम बहारों को साथ लाएँगे।
जैसे आती नहीं नजर दुनिया, हम चलाएँगे ये हँसी दुनिया,
हौसले और अपनी मंजिल से,
सब नजारों को साथ लाएँगे।
चाँद तारों को साथ लाएँगे...

प्रेम की रोशनी जो बिखरेगी,
और प्रतिभा सबकी निखरेगी,
खौंच लेंगे गगन से इन्द्रधनुष
बढ़ते धारों को साथ लाएँगे।
चाँद तारों को साथ लाएँगे...

हम हैं निर्माता अपने भारत के,
पूरे करते हैं सपने भारत के,
हम कलम के वही सिपाही हैं
जो हजारों को साथ लाएँगे।
चाँद तारों को साथ लाएँगे...

हमने माना, टीचर्स ऑफ बिहार, दीप ऐसा जलाएँगे इस बार,
हम नवाचारी शिक्षा की राह में
बहारों को साथ लाएँगे।
चाँद तारों को साथ लाएँगे...

पद्यपंकज
काव्य संग्रह

अस्वीकरण

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

संपादक मंडल

संरक्षक
डॉ० चन्दन श्रीवास्तव
सहायक आचार्य (शिक्षा), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी एवं शैक्षिक समन्वयक, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

मार्गदर्शक
शिव कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय नारायणपुर, बिक्रम, पटना

तकनीकी सहयोग
ई ० शिवेंद्र
प्रकाश सुमन

संपादक
अमितेश कुमार
राजकीय बुनियादी विद्यालय रेपुरा प्रखंड सकरा जिला मुजफ्फरपुर बिहार

सह-संपादक
मधु कुमारी
प्रा०वि०बाँधकट्टा आजमनगर कटिहार

डिज़ाइन
अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपर, सिवान

संरक्षक का संदेश



प्रिय साथियों,

बिहार के शिक्षकों द्वारा सृजित मासिक काव्य-संग्रह 'पद्यपंकज' का प्रत्येक अंक साहित्यिक संवेदनाओं, सृजनात्मक चिंतन और मानवीय मूल्यों का अनुपम संगम प्रस्तुत करता है। इसमें प्रकाशित प्रत्येक रचना केवल शब्दों का संयोजन मात्र नही, बल्कि रचनाकारों के अंतर्मन की अनुभूतियों, जीवन-दृष्टि, सामाजिक सरोकारों तथा सांस्कृतिक चेतना का सजीव प्रतिबिंब है। यह संग्रह न केवल सृजनशील शिक्षकों को साहित्यिक प्रतिभा को अभिव्यक्ति प्रदान करता है, बल्कि साहित्य के माध्यम से समाज में सकारात्मक विचारों और संवेदनशीलता का भी प्रसार करता है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि 'पद्यपंकज' प्रत्येक अंक के साथ निरंतर नए रचनाकारों को अपने साथ जोड़ते हुए विविध विषयों पर भावपूर्ण, मौलिक एवं उत्कृष्ट काव्य-रचनाओं का प्रकाशन कर रहा है। यह निरंतरता इस बात का प्रमाण है कि शिक्षकों के भीतर निहित साहित्य-साधना की ज्योति आज भी पूर्णसमर्पण और ऊर्जा के साथ प्रज्वलित है।

निस्संदेह, ये रचनाएँ पाठकों के हृदय में गहन संवेदनाओं का संचार करेंगी और उन्हें आत्मिक संतोष का अनुभव कराएँगी।

मैं इस अंक में अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति देने वाले सभी शिक्षक-कवियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। साथ ही, इस कृति के प्रकाशन में समर्पित भाव से योगदान देने वाले संपादकमंडल, सहयोगियों तथा समस्त पाठकों के प्रति भी अपनी हार्दिक शुभेच्छाएँ व्यक्त करता हूँ।

मेरी मंगलकामना है कि 'पद्यपंकज' इसी प्रकार साहित्य-साधना के इस पावन अभियान को निरंतर आगे बढ़ाता रहे, नई प्रतिभाओं को मंच प्रदान करता रहे तथा अपनी सृजनात्मक यात्रा के माध्यम से समाज में संवेदनशीलता, मानवीय मूल्यों और साहित्यिक चेतना का प्रकाश फैलाता रहे।

सभी रचनाकारों, पाठकों एवं साहित्य-प्रेमियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

सादर,

डॉ० चन्दन श्रीवास्तव

सहायक आचार्य (शिक्षा),
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं
शैक्षिक समन्वयक,
भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय,
भारत सरकार

शुभकामना संदेश



"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है । यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है, जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

13/04/25

डॉ. रश्मि प्रभा

पूर्व संयुक्त निदेशक

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

शुभकामना संदेश



"पद्यपंकज" जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नहीं बाँधतीं, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं "पद्यपंकज" पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

डॉ. स्नेहाशीष दास

विभागाध्यक्ष,
विद्यालयी शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

संपादकीय



प्रिय साथियों,

सादर अभिवादन

शब्द केवल विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होते, बल्कि वे भावनाओं को स्वर देने, संवेदनाओं को जगाने और समाज को नई दिशा दिखाने की शक्ति भी रखते हैं। जब शब्दों में कल्पना का रंग, अनुभवों की गहराई और हृदय की संवेदना घुल जाती है, तब कविता का जन्म होता है। इसी सृजनात्मक चेतना को एक साझा मंच प्रदान करने के उद्देश्य से टीचर्स ऑफ बिहार की मासिक ई-पत्रिका **'पद्यपंकज'** साहित्य और काव्य के क्षेत्र में अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज करा रही है। 'पद्यपंकज' केवल कविताओं का संकलन नहीं, बल्कि शिक्षक समुदाय की साहित्यिक प्रतिभा, रचनात्मक सोच और संवेदनशील अभिव्यक्ति का एक सुंदर दस्तावेज है। यह ऐसा मंच है जहाँ कक्षा-कक्ष में ज्ञान का दीप जलाने वाले शिक्षक अपनी कल्पनाओं को शब्दों में ढालते हैं, जीवन के अनुभवों को कविता में पिरोते हैं और समाज के प्रति अपनी संवेदनशील जिम्मेदारियों को अभिव्यक्त करते हैं। हमारा विश्वास है कि प्रत्येक शिक्षक के भीतर एक सृजनशील व्यक्तित्व भी निवास करता है। कोई प्रकृति की सुंदरता में कविता खोजता है, कोई सामाजिक विसंगतियों पर अपनी कलम चलाता है, कोई मानवीय रिश्तों की आत्मीयता को शब्द देता है, तो कोई बच्चों के सपनों और उनके उज्ज्वल भविष्य को अपनी रचनाओं का विषय बनाता है। 'पद्यपंकज' इन सभी भावनाओं और विचारों को एक साझा साहित्यिक परिवार में जोड़ने का प्रयास है। इस पत्रिका के प्रत्येक अंक में प्रकाशित रचनाएँ हमारे रचनाकारों की कल्पनाशीलता, भाषा की विविधता और विचारों की समृद्धि का परिचय देती हैं। हमारा प्रयास है कि नवोदित और अनुभवी, दोनों प्रकार के रचनाकारों को समान अवसर मिले तथा उनकी रचनात्मक यात्रा को प्रोत्साहन प्राप्त हो।

मैं सभी रचनाकारों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अपनी बहुमूल्य रचनाओं से 'पद्यपंकज' को समृद्ध बनाया है। साथ ही, संपादन, संकलन और प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगियों के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। आइए, हम सब मिलकर शब्दों की इस यात्रा को आगे बढ़ाएँ। अपनी कलम को सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बनाएँ। ऐसी रचनाएँ लिखें जो मन को स्पर्श करें, विचारों को प्रेरित करें और समाज में मानवीय मूल्यों की सुगंध बिखेरें।

आप सभी का स्नेह, सहयोग और रचनात्मक सहभागिता ही 'पद्यपंकज' की वास्तविक शक्ति है।

अमितेश कुमार

राजकीय बुनियादी विद्यालय रेपुरा

प्रखंड सकरा जिला मुजफ्फरपुर बिहार

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
01	आत्मा की अमरता	कुमारी प्रियंका वर्मा	09
02	बच्चो! तुम फूल मेरे, बागवान के समान	पूनम कुमारी	10
03	चंपारण ने राह दिखाया	सीताराम राय	11
04	गणित का असली सार	धर्मेन्द्र कुमार ठाकुर	12
05	घोसला, पक्षी और पर्यावरण	सुनीता कुमारी	13
06	The Man with Indomitable Will	Ashish Kumar Pathak	14
07	क्या सच में आज अहिंसा दिवस है?	रिंजू कुमारी	15
08	मीना की बच्चियों	नीतू रानी	16
09	मुझे मेरा बचपन लौटा दे	खुशबू कुमारी	17
10	नव शक्ति	नूतन कुमारी	18
11	निपुण बिहार : एक संकल्प	अक्षय श्रीवास्तव	19
12	पेड़ लगाएँ, प्रकृति को हरा-भरा बनाएँ	मृत्युंजय कुमार	20
13	पुराने गौरव की बदलती तस्वीर	जितेन्द्र पासवान	21
14	प्यारे बच्चे	आशीष अम्बर	22
15	धरती मैया के रखवार	सुनील कुमार प्रजापति	23
16	दस सिरों का रावण	राकेश कुमार	24
17	नारी सम्मान या आडंबर	ऐंन्जल कुमारी	25
18	हरिगीतिका छंद	रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'	26
19	मातृशक्ति	बेबी अर्चना	27
20	मन का रावण कब मारोगे	धीरज कुमार	28
21	फिर रावण जलेगा	संजीत कुमार निगम	30
22	स्वाभिमान, सत्य और सेवा का संकल्प	कार्तिक कुमार	31
23	अपना मंच, अपना सम्मान	शिवेंन्द्र प्रकाश सुमन	32
24	रे पथ के पथिक! तू अबाध गति से चल	गौरव कुमार तिवारी	33
25	प्रकृति के प्रागंण में	पुरुषोत्तम कुमार	34
26	विद्यालय से विदाई पर चंद पंक्तियाँ	एम. एस, हुसैन केमूरी	35
27	सब मिलकर एक दीप जलाएँ	सुबाला कुमारी	36

आत्मा की अमरता



कुमारी प्रियंका वर्मा
प्राथमिक विद्यालय भूसहुला
डिहरी (रोहतास)

अपने धुन में ही लगे हैं सब
किसी को किसी की सोच नहीं
समझ सको समझो ,ये जिंदगी बोझ नहीं
आज इस रूप , कल किसमें ये
हमको इसका अफसोस नहीं।।
जैसे पुराने अम्बर त्याग, हम पहने पोशाक नयी,
वैसे ही यह जीर्ण तन त्याग, करता है प्रस्थान कही,,
कभी बालक बन हर्षाए,
कभी प्रेमी सा नित घबराए।।
कभी मां के दुग्ध का पान करे
कभी कोई कार्य महान करे
कभी पीड़ा को सहन करे,
कभी पाप का हनन करे।।
मृत्यु एक विश्राम स्थल है
जहाँ शरीर विश्राम करें,,
कभी बसंत में हर्षाए,
कभी पतझड़ बन झड़ जाए
कभी पंक्षी की गुंजार करे
कभी फूलों से श्रृंगार करे
कभी भाग्य पर इतराए
कभी करता हाय हाय
कभी पपीहे के रूप में स्वाती का इंतजार करें,
कभी चकोर के वेश में चांदनी से प्यार करें,,
कोई नहीं है इस जग में ,
जो आत्मा का संहार करे
मृत्यु एक विश्राम स्थल है
जहाँ शरीर विश्राम करें।।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

बच्चों तुम फूल मेरे, बागवान के समान



पुनम कुमारी
उच्च माध्यमिक विद्यालय, करजा
प्रखंड — शाहपुर, जिला — भोजपुर

बच्चों, तुम फूल मेरे, विद्यालय बागवाँ,
तुमसे ही महके सदा, मेरा प्यारा विद्यालय-उद्यान।
ज्ञान की धूप में खिलते, सपनों के रंग सजाते,
मेहनत और अनुशासन से, जीवन को सफल बनाते।
गुरु हैं माली बनकर, देते ज्ञान महान,
बच्चों, तुम फूल मेरे, बागवान के समान।
कोई गुलाब-सा सुंदर, कोई कमल-सा प्यारा,
कोई सूरजमुखी बनकर, करता जग में उजियारा।
मिल-जुलकर आगे बढ़ना, यही हमारा मान,
बच्चों, तुम फूल मेरे, बागवान के समान।
देश का भविष्य तुम हो, तुमसे देश महान,
तुम्हारी प्रतिभा से रोशन, भारत का आसमान।
सच्चाई और प्रेम से, बढ़ाओ देश की शान,
बच्चों, तुम फूल मेरे, बागवान के समान।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

चंपारण ने राह दिखाया



सीता राम राय
मध्य विद्यालय, कोटवांपट्टी रामपुर,
छपरा सदर, सारण

चम्पारण ने राह दिखाया,
गांधी को अपने घर लाया;
शोषण की तस्वीर दिखाकर,
सत्याग्रह का प्रयोग कराया।
'तीनकठिया' ने ख़ूब सताया,
जनजीवन को किया बेहाल;
घर-घर जाकर,ठोक-बजाकर,
दिल ने पूछा, दर्द का हाल।
देख उन्हीं पद-चिन्हों को,
कई धीर सपूतों ने ठाना;
बेड़ियों -वंदिशों को थोड़ा,
सीखा पग-पग साथ निभाना।
घेरा डाला, डेरा डाला,
दृढ़ निश्चय का लिया सहारा;
नैतिक-विजय बड़ी मुस्काई,
'महामानव' जब उसे पुकारा।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

गणित का असली सार



धर्मेंद्र कुमार ठाकुर
प्राथमिक विद्यालय रेही टोला
रानीगंज अररिया

शून्य कहे— “मैं खाली हूँ,”
पर पीछे लगकर मान बढ़ाता।
एक अकेला जब आ जाए,
शुरुआत नई वह कर जाता।
शून्य से दस तक पहुँच गए,
तो खेल समझ में आया है।
गणित की समझ सीख लो तुम,
इसमें ही ज्ञान समाया है।
जोड़ सिखाता मेल-जोल,
यह कुनबा रोज़ बढ़ाता है।
पर जैसी ही आए घटाव की बारी,
सबका अंतर साफ़ दिखाता है!
गुणा करे पल में तरक्की,
संख्या सौ गुनी हो जाए।
और भाग सिखाए बांट के खाना,
चाहे हिस्सा छोटा हाथ आए!
जब जीवन में आ जाए उलझन,
और राहें अलग-अलग हो जाएँ।
तब लघुत्तम (LCM) सबको साथ मिलाकर,
एक बड़ा सा संगठन बनाएँ!
और ढूँढना हो जब गहरा रिश्ता,
जो सबके अंदर कॉमन (Common) भाई।
तब महत्तम (HCF) काम में आता,
जिसने सबसे बड़ी कॉमन वैल्यू पाई!
पेपर में जब ‘एक्स’ (x) और ‘वाई’ (y),
भूत बनकर डराने आते हैं।
अच्छे-अच्छे ज्ञानी बाबू भी,
सिर खुजलाकर रह जाते हैं!
कहते हैं “माना राम की आयु…”,
खुद राम भी चक्कर खा जाए।
जो उलझाए ऐसे सवाल,
उसे शून्य का डंडा रास आए!
पर मत डरना तुम इन भूतों से,
ये बस तुमको भरमाते हैं।
लौट के बुद्धू घर को आए,
फिर शून्य से दस पर आते हैं!
सब गणना का सार यहीं पर,
दुनिया ने महिमा गाई है।
जिसने सीखे ये छह नियम,
उसने ही असली बुद्धि पाई है!

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

घोसला, पक्षी और पर्यावरण



सुनीता कुमारी
विद्यालय – उत्क्रमित मध्य विद्यालय
मानिकपुर, मधेपुरा

प्यारे प्यारे, बच्चे आओ,
घोसला बनाओ, पक्षियों को बचाओ।
हर विद्यालय में, घोसाला निर्माण,
हर आँगन में, पक्षियों को स्थान।
होगा संतुलित, पर्यावरण निर्माण,
पक्षियों का इसमें, बड़ा योगदान।
घोसला बनाकर, विद्यालय सजाएं,
पर्यावरण के प्रति, बच्चो को सजग बनाएं
हमसब मिलकर, योजना बनाएं,
बच्चों में पर्यावरण, प्रेम जगाएं।
आओ पक्षियों, तुम हो खास,
पर्यावरण की,तुम हो साज।
तुम्हारे साज से, पर्यावरण सजता,
प्रदूषण रहित, तुम्हारे धुन गुंजता।
मीठी-मीठी, तुम्हारी वाणी,
कर्ण सुख, पाते है प्राणी।
जीवन तो है, आनी जानी,
चलती रहती, तुम्हारी कहानी।
आओ हम सब, पर्यावरण बचाएं,
विद्यालय में, एक घोसला बनाएं।
इस कदम को, हम सभी अपनाएं,
हर कदम से, पर्यावरण बचाएं।
एक विद्यालय, एक घोसला,
स्वस्थ्य पर्यावरण, स्वस्थ्य हौसला।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

The man with Indomitable will



Ashish Kumar Pathak
Middle School Sarha Dharhara
Munger

A leader whose actions were guided
by indomitable will;
Future generations will hardly believe
a man walked in such flesh and bone;
Called forth hidden spirit
of truth in Indian people;
Embraced the whole world
in his thought;
his non violent resistance method
still effective for India and the World;
Walked Eighteen kilometre per day
enough to circle the globe twice;
Fought through his life what he called
“the deep disease of colour;
Spoke English with Irish accent in life
Just to honour his early Teacher;
Respect for him Comes naturally to the world
because no life was such simple yet effective

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

क्या सच में आज अहिंसा दिवस है?



रिंजू कुमारी
फारबिसगंज अररिया
बिहार

कागज़ों पर लिखकर अहिंसा,
क्या सच में हम बदल पाए हैं?
हिंसा तो हर ओर दिखाई देती,
फिर किस बात पर इतराए हैं?

समाज में हिंसा देखने से पहले,
क्यों न खुद के भीतर झाँकें,
दूसरों में दोष तलाशने से पहले,
अपने ही मन के द्वेष को आँकें।

शब्दों में भी हिंसा होती है,
नज़र में भी तिरस्कार,
कभी मौन बनकर चुभती है,
कभी बन जाती है व्यवहार।

जरूरत है पहले अपने भीतर
क्रोध, घृणा को हराने की,
अहंकार की दीवार गिराकर,
इंसानियत को अपनाने की।

अहिंसा केवल दिवस नहीं,
यह जीवन का संस्कार बने,
पहले मन में शांति खिले,
फिर दुनिया भी शांत बने।

बदलाव की शुरुआत दूसरों से नहीं,
आज अपने आप से करें—
तभी अहिंसा दिवस का अर्थ,
सच में सार्थक हम करें।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

मीना की बच्चियां



नीतू रानी

स्कूल -म०वि० रहमत नगर सदर

मुख्यालय पूर्णियाँ बिहार।

मीना की बच्ची ने कर दी कमाल
ड्रेस में आती स्कूल
रीबन से बाँध के बाल
समय पर आती हैं मीना की बच्चियाँ,
स्कूल में सबको भाती हैं
मीना की बच्चियाँ।
मीना की बच्ची ने।
जो बच्चे स्कूल नही आते
मीना उसके घर पर हैं
जाती,
उनके माता-पिता को
प्यार से है मीना समझातीं
स्कूल की शिक्षा से बच्चों को जुड़वाती हैं
मीना की बच्चियाँ।
स्कूल में सबको भाती हैं।
स्कूल के हर कामों में
रोज़ मीना है हाथ बंटातीं
जिस दिन शिक्षक कम होते
मीना शिक्षक बन बच्चों को पढ़ातीं,
मीना स्कूल में अपना
कलाकारी दिखाती हैं
नौ से चार तक।
स्कूल में डटे रहती हैं
नौ से चार तक।
मीना स्कूल को हरदम
रखतीं हैं साफ, और सुंदर
स्कूल में लगे फूलों में
पानी देती रहती हैं बराबर,
मीना के इन कामों से
स्कूल में छाई है खुशियाँ
मीना की बच्चियाँ
स्कूल में सबको भाती हैं।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

मुझे मेरा बचपन लौटा दे



खुशबू कुमारी
मध्य विद्यालय गोला पंचायत जे पी कॉलोनी चंदवारा मुजफ्फरपुर

ऐ गुजरा हुआ समय,
मुझे मेरा बचपन लौटा दे।
थक चुकी हूँ जीवन से,
मुझे मां की वह गोद दिला दे।।
वह गुड़ियों से खेलना,
वह मिट्टी के घरौंदे बनाना।
वह चुपके से दोपहरी में,
पेड़ों पर चढ़ जाना।।

ना किसी चीज की चिंता
ना पैसों का मोल,
जहां बस मीठी बोली से,
लेते थे हम सबको तोल।।

आज फिर से याद आ गया वह बचपन,
चल मुझे अब वहीं लौटा दे।
ऐ गुजरा हुआ समय,
मुझे मेरा बचपन लौटा दे।।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

नवशक्ति



नूतन कुमारी
प्राथमिक विद्यालय पोखरिया
पूर्णियाँ, बिहार

हे दुर्गा ! हे चंडिके! हे महामाया!
स्त्री रुप है तेरी ही छाया,
तेरी नवशक्ति से दुनिया कायम,
तूने यह मानव को समझाया।

नारी का जग सम्मान करें,
यह बात न हो कभी भी मिथ्या,
वो ख़ुश करता नवशक्ति को,
जो समझें नारी की व्यथा।

नारी को समानता का है अधिकार,
नहीं कम आँको, न करों अत्याचार,
स्वतंत्रता दो आसमां छूने की,
पा लेने दो उसे भी रोज़गार।

बेटी से मत घबराओ कभी,
संवैधानिक अधिकार उसे भी है,
दहेज प्रथा से मुक्ति दिलाओ सभी,
शिक्षा का अधिकार उसे भी है।

स्त्री को सुरक्षा प्रदान कर,
उसके हित का कल्याण कर,
नारी शक्ति का तू भान कर,
नित नवदुर्गा का वंदन कर।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

निपुण बिहार — एक संकल्प



अक्षय श्रीवास्तव
यू एम एस पहाड़पुर मकतब

चलो आज फिर एक दीप जलाएँ,
हर बच्चे को आगे बढ़ाएँ।
जिसके हाथ में कलम हो प्यारी,
उसकी आँखों में हो दुनिया सारी।
नन्हे कदम हैं, सपने बड़े हैं,
ज्ञान की राह पर बच्चे खड़े हैं।
उन्हें उड़ान देना है हमें,
उनके सपनों को पंख देना है हमें।
पढ़ेगा बच्चा, बढ़ेगा बिहार,
ज्ञान से होगा रोशन संसार।
हर बच्चे का यही अधिकार
निपुण बनेगा अपना बिहार!
अक्षर-अक्षर ज्ञान सिखाएँ,
गिनती से संसार बताएँ।
खेल-खेल में सीखें बच्चे,
हँसते-हँसते आगे बढ़ें बच्चे।
शिक्षक केवल पाठ न पढ़ाएँ,
बच्चों में विश्वास जगाएँ।
हर बच्चे की क्षमता पहचानें,
उसके सपनों को पंख लगाएँ।
न गाँव पीछे, न शहर पीछे,
हर बच्चा हो ज्ञान में आगे।
हर विद्यालय बने मिसाल,
हर बच्चे के चेहरे पर हो उजाल।
हमने ठाना, कर दिखलाएँ,
निपुण बिहार हम बनाएँ।
एक-एक बच्चे की जिम्मेदारी,
यही है शिक्षक की सच्ची तैयारी।

आज हमारा छोटा प्रयास,
कल बनेगा बिहार का विकास।
ज्ञान की गंगा बहे अपार
निपुण बिहार, निपुण बिहार!
आओ मिलकर शपथ उठाएँ,
हर बच्चे को निपुण बनाएँ।
शिक्षा का दीप घर-घर जलाएँ,
नए बिहार का सपना सजाएँ।
बच्चा-बच्चा बने होशियार,
यही हमारा है संकल्प अपार।
ज्ञान, कौशल और संस्कार
निपुण बनेगा अपना बिहार!

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

पेड़ लगाएँ, प्रकृति को हरा-भरा बनाएँ



मृत्युंजय कुमार
NPS खुटौना यादव टोला
पताही, पूर्वी चंपारण

आओ, हम सब पेड़ लगाएँ,
प्रकृति को हरा-भरा बनाएँ।
हरियाली फैलाएँगे,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाएँगे।
एक-एक पेड़ लगाना है,
धरती को स्वर्ग बनाना है।
आओ, बच्चों! आगे आओ,
विद्यालय में पेड़ लगाओ।
आओ, मिलकर जागरूकता फैलाएँ,
जन-जन तक यह संदेश पहुँचाएँ।
पेड़-पौधे लगाना है,
हरियाली फैलाना है।
प्रकृति को अगर बचाना है,
हम सबको आगे आना है।
स्वच्छ एवं हरित वातावरण बनाना है,
हम सब को मिलकर पेड़-पौधे लगाना है।
आओ, मिलकर एक समूह बनाएँ,
प्रकृति संरक्षण की मुहिम को आगे बढ़ाएँ।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

पुराने गौरव की बदली तस्वीर



कवि: जितेन्द्र पासवान
P.n.m+2 h/s chaturbhuj
piprahi (Madhubani)

क्या बखान करूँ इस धरती का, मेरे पास अब वो शब्द कहाँ।
जिस भारत की गाथा गूँजती थी, अब वो सुनाने का वक्त कहाँ !!
कहाँ गई वो स्वर्णिम छाया, कहाँ गए वो संस्कार यहाँ?
जिस मिट्टी में त्याग बसा था, अब बस दिखता व्यापार यहाँ !!
शिक्षा भी अब बिकती देखी, ज्ञान हुआ बाज़ार यहाँ!
गुरुकुल की वो पावन धारा, ढूँढ़े नहीं मिलते गुरु महान!!
कभी गुरुओं का मान था ऊँचा, आज कहाँ वो सम्मान यहाँ?
डिग्री लेकर घूम रहे सब, पर दिखते नहीं इंसान यहाँ !!
इतिहास की बातें करते हैं, पर पढ़ने का अब ध्यान कहाँ?
संस्कारों की बातें सब करते, पर दिल में उनका स्थान कहाँ !!
क्या बखान करूँ इस धरती का, मेरे पास अब वो शब्द कहाँ।
जो था कभी जग उजियारा, आज वही खुद बेनूर यहाँ !!
मेरे पास अब वो शब्द कहाँ। हाँ, मेरे पास अब वो शब्द कहाँ।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

प्यारे बच्चें



आशीष अम्बर
शिक्षक, दरभंगा, बिहार

कितना प्यारा है यह संसार।
बागों में आ गई देखो बहार।
चलो झूम कर नाचे गाएं।
हिल–मिल कर हम खुशी मनाएं।
हम बच्चें है कितने अच्छे।
कुछ भी हो पर मन के सच्चे।
पापा–मम्मी के हम प्यारे।
वे कहते हमें राज दुलारे।
आपस में हम मिलकर रहें।
बुराई हम किसी की न सहें।
पढ़ें–लिखें कुछ नाम कमाएं।
समय को हम न व्यर्थ गवाएं।
जीवन हमारा है अनमोल।
बोले हम सबसे प्यारे बोल।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

धरती मईया के रखवार



सुनील कुमार प्रजापति
नव0 प्रा0 वि0 इमामगंज, ओबरा,
औरंगाबाद, बिहार

हम हिअइ प्रकृति के प्रहरी,
धरती मईया के रखवार,
पेड़-पात, नदिया अउर पहाड़,
ई सब हइ जिनगी के आधार।
धरती मईया रोवत हथिन,
देख के मनई के व्यवहार,
काट-काट के पेड़ गिरावऽ ह,
उजड़ रहल चिरई के संसार।
कोयल के कुहुक, पपिहरा के बोल,
अब काहे सुनाई न दे हइ?
जंगल-झाड़ उजड़ गेलई,
चिरई के बसेरा कहाँ रहे हइ?
नदिया के पानी मैला हो गेलई,
पोखरा के छाती सूख रहलई,
कल-कारखाना के जहरवा से,
हवा के दम घुट रहलई।
अरे मनई! अब तऽ चेतऽ,
काहे बनल हऽ अन्हार?
प्रकृति के छाती चीर-चीर के,
कइसे बसतऽ सुख के संसार?
एकह गो पेड़ लगइबई,
सुखल धरती के हरियर बनइबई,
नदिया, पोखर,आहर,पईन,
मिल जुल के सबके बचइबई।
इहे संकल्प आज लेइत हिअई,
कभी प्रकृति से खिलवाड़ न करबई।।
जय प्रकृति। जय धरती मईया।।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

दस सिरों का रावण



राकेश कुमार,
विज्ञान शिक्षक,
मध्य विद्यालय, अमौना।

दशहरा आया, शंख बजाओ, गूँजे जय-जयकार,
मन के रावण को भी मारो, यही विजय का सार।
कब तक कागज़ के पुतले को अग्निबाण दिखलाओगे?
कब अपने भीतर के दानव को जड़ से मिटा पाओगे?
दस सिर लेकर आज भी रावण मानव मन में पलता है,
बाहर पुतला जलता है, भीतर दानव चलता है।
एक-एक सिर एक विकार है, एक-एक अभिशाप,
इनके रहते कैसे मिटेगा मानवता का संताप?
प्रथम शीश है काम, जगाता वासना की ज्वाला,
दूजा क्रोध, विवेक हर ले, कर दे बुद्धि को काला।
तीजा लोभ, न कभी भरे जिसकी चाहत का प्याला,
चौथा मोह, सत्य पर डाल दे भ्रम का घना दुशाला।
पाँचवाँ मद, पद-धन के बल पर करता है अभिमान,
छठा मत्सर, परहित देखकर जलता है दिन-रात।
सातवाँ स्वार्थ, स्वयं के हित में भूले जग के नाते,
आठवाँ अन्याय, कुचल-कुचलकर निर्बल को तड़पाते।
नवाँ अमानवीयता, जिसमें करुणा का अवसान,
दसवाँ शीश अहंकार, स्वयं को माने भगवान।

दस सिर, दस दुर्गुण, दस बंधन, दस पतन के द्वार,
इनको जीते बिना अधूरी हर विजय की धार!
काम जले, संयम जागे; क्रोध जले, विवेक,
लोभ जले, संतोष खिले; मोह हटे, हो नेक।
मद के बदले विनय विराजे, मत्सर मिटे, सद्भाव,
स्वार्थ हटे, सेवा मुस्काए, न्याय बने स्वभाव।
निर्दयता की राख उड़े, करुणा का विस्तार,
अहंकार का अंत हो, ऊँचा हो मानव का मान।
तब जाकर इस देश धरा पर नई प्रभा छाएगी,
तब सच्चे अर्थों में धरती रामराज्य कहलाएगी।
केवल जय श्रीराम कहने से राम नहीं मिलते हैं,
राम-सदृश आचरण से ही जीवन-पथ खिलते हैं।
जहाँ न्याय हो, दया हो, समता का सम्मान,
जहाँ न कोई दीन-दुखी हो, ऊँचा हो इंसान।
पुतला जलाना सरल बहुत है, मन को कौन जलाए?
अपने भीतर छिपे रावण को कौन आज हराए?
आओ, आज प्रतिज्ञा कर लें, बदलेंगे व्यवहार,
दसों सिरों को भस्म करेंगे, यही विजय-त्योहार!
बाहर रावण दहन तभी हो भीतर राम जगाएँ,
अपने कर्मों से धरती पर राम जगाएँ,

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

नारी : सम्मान या आडंबर?



एंजल कुमारी

कक्षा – 09

वि0 – उ0 मा0 वि0 बसंतपुर, सुपौल

मंदिर में पूजे देवी को,
बाहर डालते कुदृष्टि,
क्यों करते नारी का अपमान?
जब उसमें भी बसी है शक्ति।
देवालय में शीश झुकाकर,
खुद को महान बताते हो,
घर में उपस्थित माता के सेवा से
कतराते हो।
नवरात्रि के नौ दिन खूब भक्ति करते,
बाकि दिन उसी स्त्री शक्ति को,
कमजोर, लाचार कहते।
घर में अपमान करते नारी का,
फिर मंदिर में क्यों गुणगान?
ढोल-नगाड़े, दीपों की माला,
क्या यही सच्चा सम्मान?
नारी का सम्मान जहाँ, वहीं बसते भगवान,
वरना मंदिर की हर पूजा, केवल है
दिखावा और अभिमान।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

हरिगीतिका छंद



रामपाल प्रसाद सिंह अनजान

आकीर्ण तेरी सिद्धियों से, जब चराचर था दुखी।
शिव ने किया मनुहार तुझसे, कर दिया माँ ने सुखी।।
हे कालिका माँ! हस्त दाएँ, चक्र सह सोहे गदा।
कर वाम में हैं शंख उत्पल, जय कराती हैं सदा।।
दिन शुभ महानवमी सुधा रस,भक्तजन पीकर रमे।
मृत प्राप्त हर दानव हुआ तो, देवगण जीभर रमे।।
संस्थापना हो धर्म की हर, कार्य संभव कर दिया।
जो सोचकर भयभीत थे जन, आपने ही कर लिया।।
सब मूर्तियों में जान आए, सिद्धियों के योग से।
पर आदमी निर्बल हुआ है, रात-दिन सुख-भोग से।।
हे माँ! जगा दो चेतना को, मोह के परित्याग से।
मम मोक्ष मिल जाए खुशी से, सिद्धियों के राग से।।
'अनजान' भी पहुँचे हुए हैं, न्याय के दरबार में।
पूजन किये हैं आज विधिवत, शांति के संसार में।।
शुभ दीप घी के भी जलाए, और सब हैं थाल में।
बल-आयु-धनवर्धन करें माँ, हम रमे शुभ ख्याल में।।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

मातृशक्ति



बेबी अर्चना
मध्य विद्यालय कुआड़ी

हे मातृशक्ति अब जाग भी जाओ,
कर निज-अस्तित्व की तू पहचान।
बन सबला कर निज पथ- प्रशस्त,
तभी ही मिलेगा जग में सम्मान।
उम्मीदों के तुम पंख अब खोलो,
इन्द्रधनुष सी नभ में छा जाओ।
चाहे राहों में मिले बाधा अनगिन,
तुम निर्मल सरिता सी बह जाओ।
तुम शक्तिस्वरूपा, जीवन-आधार,
है धरा-गगन अपरिमित विस्तार।
जननी, भार्या, सुता, भगिनी बनकर,
संपूर्ण मानवता को देती हो सार।
वात्सल्यप्रेम, तप, त्याग की देवी,
हो शक्ति की तुम पुण्य प्रतीक।
संपूर्ण सृष्टि भी बिन तेरे अधूरी,
सहज स्नेह लुटाती हो निर्भीक।
सहनशीलता में उनका न सानी,
उर पाहन रख सबकुछ सहती।
प्रेम, दया और करूणाभाव संग,
समर्पण के कई पाठ है पढ़ती।
है नारी अगर समस्त जग-आधार,
फिर क्यों उनपर होता अत्याचार।
कोई आँख दिखाए गर अस्मत पर,
ले दुर्गा, चंडी और, काली अवतार।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

मन का रावण कब मारोगे?



धीरज कुमार
मुजफ्फरपुर, बिहार

वो रावण था, क्योंकि वसुधा को
शापित कर अधिकार किया।
गंधर्व, यक्ष पर क्या कहना,
देवों पर अत्याचार किया।
वो रावण था, क्योंकि स्वयं को,
भगवान से ऊपर मान लिया।
ना माना वेद और शास्त्र नियम,
ऋषियों तक का भी वो प्राण लिया।
वो रावण था, क्योंकि स्व भ्राता,
कुबेर पर भी आक्रमण किया।
पुष्पक विमान और स्वर्ण लंका,
बलपूर्वक उसने छीन लिया।
वो रावण था, क्योंकि रंभा से
बलपूर्वक दुराचार किया।
इच्छा विरुद्ध, स्त्री स्पर्श से
मस्तक खंडन का श्राप मिला।
वो रावण था, क्योंकि पर नारी को,
बलपूर्वक पाना चाहता था।
भार्या समझाये या भाई, गुरु,
वो नहीं किसी की मानता था।
वो रावण था, क्योंकि सीता का
छलपूर्वक अपहरण किया।
अपने अनैतिक कार्य सिद्धि में,
साधु का वेश धारण किया।
वो रावण था, क्योंकि निज भाई,
विभीषण का भी त्याग किया।
अपने हठधर्म की आड़ में ही,
कुल नाश का भी दुर्भाग्य लिया।

वो रावण था, विद्वान बहुत ही,
धर्म, उपनिषद का ज्ञाता था।
पर नीति, न्याय, सदगुण, परहित,
यह मंत्र न उसको भाता था।
वो रावण था, क्योंकि उसके
दस सिर थे दस बुद्धि कारक।
पर दस विकार को धारण कर,
बन गया स्वयं का संहारक।
वो रावण था, इतना सब कुछ
होकर भी संधि भेजे राम।
पर दर्प बढ़ा था इतना कि,
ना आया उसके यह भी काम।
वो रावण था, इतना सब कुछ
होकर भी संधि भेजे राम।
पर दर्प बढ़ा था इतना कि,
ना आया उसके यह भी काम।
वो रावण था, तब तो भगवन ने,
उसका ऐसा संहार किया।
शोषित, पीड़ित जनता का प्रभु ने
स्वयं ही आ उद्धार किया।
वो रावण था, तब तो अब तक,
उसके कर्मों को गिनाते हो!
हर विजयादशमी के शुभ दिन,
अब तक तुम उसे जलाते हो।
पर क्या तुमने कभी सोचा स्वयं,
कब तक बस उसे दुत्कारोगे?
जो तेरे मन में है बैठा,
उस रावण को कब मारोगे?
क्या झूठा दंभ और अनीति,
नहीं स्वयं तुम्हारे अंदर है?

क्या तुम हो मन से शुद्ध पूर्ण,
और हृदय विशाल समंदर है?
क्यों आज भी बेटियों के साथ,
कहीं कोई दुराचार होता है?
क्यों फिर संपत्ति विवाद में ही,
भाई पर भी वार होता है?
क्यों काम वासना इतनी कि,
पर नारी देख दृष्टि मैली?
क्यों क्रोध, मोह, और लालच फिर,
मन के अंदर तेरे फैली?
कब मर्यादित हो राम भक्त सा,
तुम भी आचरण सुधरोगे?
जो तेरे मन में है बैठा,
उस रावण को कब मारोगे?
तो बस फिर राम का नाम न लो,
उनका सिद्धांत भी मानो तुम!
अब बहुत हुआ ये विकृत कर्म,
संकल्प शुद्धता का ठानो तुम।
तो आओ करते हैं हम प्रण,
रावण जो अबकी जलाएंगे।
मन में जो छिपा बैठा रावण,
एक तीर उसपर भी चलाएं!

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

फिर रावण जलेगा



संजीत कुमार निगम
प्राथमिक विद्यालय आदिवासी टोला
मधुरा फारबिसगंज अररिया

आज फिर रावण जलेगा,
हाँ, वही रावण,
जिसे त्रेता से हर साल जलाया जा रहा है,
लेकिन हर साल वह
एक नए चेहरे के साथ लौट आता है।
आज फिर अभिमान का वध होगा,
उसी अभिमान का,
जिसे कल से फिर पालना है।
आज फिर बुराई को मारा जाएगा,
उसी बुराई को,
जिसे कल से फिर दोहराना है।
आज फिर दशानन का हर आनन जलेगा,
भीड़ जय श्रीराम के नारे लगाएगी,
और उसी भीड़ में खड़ा कोई इंसान
कल फिर किसी के स्वाभिमान को कुचलेगा।
आज फिर नारी-शक्ति के सम्मान की बातें होंगी,
नारी की महिमा के गीत गाए जाएँगे,
लेकिन कल फिर किसी बेटी की चीख
इंसाफ़ के दरवाज़े पर दम तोड़ती नज़र आएगी।
आज फिर रावण को जलाकर
हम अपने राम होने का उत्सव मनाएँगे,
लेकिन अपने भीतर बैठे रावण से
नज़रें चुराकर घर लौट जाएँगे।
आख़िर कब तक पुतले जलेंगे
और बुराइयाँ ज़िंदा रहेंगी?
कब तक राम की पूजा होगी
और रावण की प्रवृत्तियाँ पलती रहेंगी?
रावण तो बस एक प्रतीक है,
असली रावण तो वह सोच है,
जो खुद को सही साबित करने के लिए
दूसरों का सम्मान कुचल देती है।
दूसरों का सम्मान कुचल देती है।
इसलिए, रावण जलाना है
तो सिर्फ़ मैदान में मत जलाओ,
अपने भीतर झाँको,
अपने अहंकार को पहचानो,
अपनी बुराइयों को मिटाओ।
क्योंकि रावण हर साल जलता है,
फिर भी हर साल लौट आता है।
जिस दिन इंसान अपने भीतर के रावण को जला देगा,
उस दिन शायद किसी मैदान में
रावण जलाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

स्वाभिमान, सत्य और सेवा का संकल्प



कार्तिक कुमार
मध्य विद्यालय कटरमाला गोरौल
वैशाली

सत्य राह का पथिक हूँ

मैं सत्य की राह का पथिक हूँ, झुकना मेरा काम नहीं,
सेवा मेरा धर्म रहा है, पद का कोई नाम नहीं।
योग-साधना जीवन मेरा, जनसेवा पहचान मेरी,
सत्य-संकल्प के दीप से रोशन रही उड़ान मेरी।
आरोपों के तूफानों से मेरा विश्वास नहीं डोलेगा,
सत्य समय की कसौटी पर हर झूठ स्वयं ही खोलेगा।
मैंने अपना जीवन सौंपा, गुरु-समाज की सेवा में,
कभी स्वार्थ को स्थान न दिया, अपने कर्मों की मेवा में।
यदि कोई भूल हुई हो, तो न्यायपूर्ण निर्णय हो,
बिना प्रमाण किसी पर दोष नहीं, सत्य का ही अनुकरण हो।
आँसू भी देखे परिवार के, पीड़ा भी मन में सहलायी,
फिर भी गुरु के चरणों में मैंने श्रद्धा नहीं गंवाई।
एक माह में आरोप-मुक्ति का निर्णय यदि स्वीकार हुआ,
तो मेरा टूटा हुआ विश्वास पुनः सेवा में साकार हुआ।
न पद की चाह, न धन की इच्छा, न यश का अभिमान है,
गुरु-समाज की निष्काम सेवा ही मेरा स्वाभिमान है।
कार्तिक कुमार का संकल्प है - सत्य की विजय कराऊँगा,
अन्याय नहीं, न्याय माँगकर सेवा-पथ पर लौट आऊँगा।
सत्य अडिग है, सत्य अमर है, सत्य कभी न हारता,
समय भले परीक्षा ले ले, सत्य ही सम्मान दिलाता।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

अपना मंच, अपना सम्मान



शिवेन्द्र प्रकाश सुमन

दूजे मंच पर रचना छाए, चेहरे पर मुस्कान,
अपने मंच पर छपे वही, तो क्यों न हो अभिमान?
दूजे मंच की प्रशंसा पाकर, मन में फूल खिलते हैं,
अपने मंच की बारी आए, शब्द न जाने क्यों सिलते हैं।
कलम भी अपनी, भाव भी अपने, अपनी रचना खास,
अपने मंच पर भी दिखे, वही खुशी, वही उल्लास।
हर मंच का अपना गौरव, हर प्रयास का मान,
जहाँ मिले अभिव्यक्ति को अवसर, उसका भी सम्मान।
दूजे मंच पर गर्व जताएँ, अपने पर भी करें अभिमान,
अपनी रचना, अपना मंच—दोनों की बढ़ाएँ शान!

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

रे पथ के पथिक! तू अबाध गति से चल



गौरव कुमार तिवारी
बलिया जनपद

रे पथ के पथिक! तू अबाध गति से चल,
ना हो निराश अकिंचन, कुछ बाधाओं से।
मन को ना मार, जीवित है तू,
तेजस्वी है तू, ओजस्वी है तू।
पथ में पाषाण हैं, कंटक हैं, गर्त हैं,
पर तेरे चरणों में तो अटल शौर्य का व्रत है।
विघ्नों की गर्जना से क्यों भयभीत है?
तेरे भीतर तो अनन्त शक्ति का गीत है।
आत्म-गौरव को सुन, आत्म-दीप से जल,
अज्ञान-तिमिर को चीर, तू प्रज्ज्वलित हो चल।
उत्थान-पतन तो जीवन के सोपान हैं,
धीर-वीर ही तो सच्चे परित्राण हैं।
रे मन! तू मत हार, तू ही तो सार है,
तेरी ही ज्वाला में, सृष्टि का प्रसार है।
चल, अबाध चल, अविराम चल,
लक्ष्य-संधान तक, तू संग्राम चल।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

प्रकृति के प्रागंण में



पुरुषोत्तम कुमार
उर्दू प्राथमिक विद्यालय लोदीपुर
गोलघर अंचल पटना

प्रकृति के प्रागंण में
अलौकिक आनंद है इस आंगन में, प्रकृति के प्रागंण में।
चिड़ियों की चहचहाट में,
पत्तियों के सरसराहट में,
घासों की हरियाली में,
गिलहरियों की खुशहाली में, भ्रमर की मतवाली में,
अद्भुत आनंद है इस फुलवारी में।
फूलों की मुस्कुराहट में,
कोयल की गुनगुनाहट में,
मंद पवन की सनसनाहट में, आनंद ही आनंद है प्रकृति के इस
सजावट में।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

विद्यालय से विदाई पर चंद पंक्तियां विद्यालय को समर्पित



एम० एस० हुसैन 'कैमूरी'
वर्तमान विद्यालय UPS बहुआरा
कुदरा कैमूर

कुछ यादें, कुछ उपलब्धियाँ, कुछ एहसास

उन्नीस नवंबर दो हज़ार सोलह को,
एक नया सफ़र शुरू किया था।
छोटका कटरा की पावन धरती पर,
हमने शिक्षा का दीप जलाया था।

सिर्फ़ शिक्षक बनकर नहीं रहा,
हर दिल से रिश्ता बनाया है।
ज्ञान की रोशनी बाँटकर मैंने,
बच्चों का भविष्य सजाया है।

कलम मेरी पहचान बनी,
शब्दों में संवेदनाएँ पिरोता रहा।
कर्तव्य को सर्वोपरि रखकर,
अपने हिस्से का फ़र्ज़ निभाता रहा।

आज विदाई की इस बेला में,
कुछ आँखें नम, कुछ दिल उदास हैं।
पर विश्वास है, मेरे प्रयासों की,
यहाँ हमारी कुछ निशानियां ख़ास हैं।

विद्यालय छूटेगा, यादें नहीं,
यह रिश्ता कभी कमज़ोर न होगा।
छोटका कटरा मेरी कर्मभूमि है,
इससे दिल का नाता कभी दूर न होगा।

मैं जा रहा हूँ नई मंज़िल की ओर,
लेकिन दिल यहीं छोड़कर जाऊँगा।
जब भी ज़िक्र होगा इस विद्यालय का,
मैं यादों में फिर लौटकर आऊँगा।
आप सभी का स्नेह, सम्मान और विश्वास
मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।
आपका यह अपनापन ही मेरी असली पूँजी है।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

सब मिलकर एक दीप जलाएं



सुबाला कुमारी
हिन्दी शिक्षिका
भागलपुर बिहार

खेतों ने ओढ़ ली है धानी चादर
भूमिपुत्र भी मंद मंद मुस्कुरा रहा है
दीपावली का शुभ दिन आ रहा है।
मौसम भी करवट बदल रहा है
सर्द ऋतु का आगाज हो रहा है
दीपावली का शुभ दिन आ रहा है।
चंचल मन हर्षा रहा है
दीपों का त्यौहार आ रहा है
दीपावली का शुभ दिन आ रहा है।
सब लोग मंगल गीत गा रहे हैं
ढोल, पटाखे और घंटियां बजा रहे हैं
दीपावली का शुभ दिन आ रहा है।
प्रकृति हो रही है भाव विभोर
चहूं ओर खुशियों की लहर उठ रही है
दीपावली का शुभ दिन आ रहा है।
सब मिलजुल कर घर सजा रहे हैं
मां लक्ष्मी भी कृपा बरसा रही है
दीपावली का शुभ दिन आ रहा है।

इस रचना को ऑडियो के रूप में सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

पद्मपंकज

आपके द्वारा दिये गए अमूल्य समय हमारे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है । यदि आपके पास कोई सुझाव हों, तो कृप्या हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें ।

Reg. No. BR/2025/0487469

Teachers Of Bihar

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ? आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ? नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सएप के माध्यम से जुड़ें।

writers teachersofbihar@gmail.com
padyapankaj.teachersofbihar.org
+91 7250818080 | +91 9650233010

पद्मपंकज के सभी अंकों को पढ़ने के लिए QR Code को स्कैन करें